



भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण
EXTRAORDINARY

भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (i)

PART II—Section 3—Sub-section (i)

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं० 288]

नई दिल्ली, बुधवार, सितम्बर 6, 1979/भाद्र 15, 1901

No. 288]

NEW DELHI, THURSDAY, SEPTEMBER 6, 1979/BHADRA 15, 1901

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या दी जाती है जिससे कि यह अलग संकलन में रूप में रखा जा सके :

Separate paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate compilation

कृषि और सिंचाई मंत्रालय

(बाघ विभाग)

नई दिल्ली, 6 सितम्बर, 1979

आदेश

सं० का० वि० 531(ख).—आ० वस्तु/बीपी.—केन्द्रीय सरकार, बीपी (निबंध) आदेश, 1966 के खंड 5 द्वारा प्रयुक्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए और भारत सरकार के कृषि और सिंचाई मंत्रालय (बाघ विभाग) के आदेश सं० का० वि० 449 (ख०)/आ० वस्तु/बीपी तारीख 19 जुलाई, 1979 को अधिष्ठापित करते हुए, यह निदेश देती है कि—

- (1) नीचे वर्णित स्थानों में कोई भी माध्यताप्राप्त व्यवहारी किसी भी समय स्टॉक में उतने परिमाण से अधिक निर्यात कच्चाहू बीपी (बैक्युम पेन गुगल) नहीं रखेगा जितनी हर एक के सामने वर्णित है,—

- (1) कलकत्ता और विस्तारित क्षेत्र में—

(क) माध्यताप्राप्त व्यवहारी जो पश्चिमी बंगाल के बाहर से बीपी आयात करते हैं—7,500 किबटल;

(ख) अन्य माध्यताप्राप्त व्यवहारी—1,000 किबटल;

- (2) अन्य स्थानों में—

(क) पांच लाख या उससे अधिक जनसंख्या वाले शहरों और नगरों में—1,000 किबटल;

(ख) एक लाख और उससे अधिक किन्तु पांच लाख से कम जनसंख्या वाले शहरों और नगरों में—5,00 किबटल;

(ग) एक लाख से कम जनसंख्या वाले अन्य नगरों में—250 किबटल;

परन्तु इस आदेश की कोई बात, निम्नलिखित द्वारा रखी गई बीपी के स्टॉक को लागू नहीं होगी—

- (1) सरकार मछे स्टॉक; अथवा
- (2) राज्य सरकार द्वारा या उसके द्वारा प्राधिकृत किसी अधिकारी द्वारा नामनिर्दिष्ट किसी माध्यताप्राप्त व्यवहारी द्वारा उचित मूल्य की दुकानों के माध्यम से वितरण के लिए रखा गया स्टॉक; अथवा
- (3) भारतीय बाघ नियम द्वारा रखा गया स्टॉक।

स्पष्टीकरण—इस आदेश के प्रयोजन के लिए, “कलकत्ता और विस्तारित क्षेत्र” से पश्चिमी बंगाल सरकार की अधिसूचना सं० 7752—कृ० ए०/ए० ए०/14/भार-92/61, तारीख 16 दिसम्बर, 1964 निर्दिष्ट क्षेत्र अभिप्रेत हैं।

- (ii) कोई भी मान्यताप्राप्त व्यवहारी किसी भी समय एक हजार क्विंटल से अधिक खण्डसारी (ओपन पैन शुगर) का स्टॉक नहीं रखेगा।

[सं. 1/23/79-एन पी आई डेस्क ii]

सी० एन० राघवण, संयुक्त सचिव

MINISTRY OF AGRICULTURE AND IRRIGATION

(Department of Food)

ORDER

New Delhi, the 6th September, 1979

G.S.R. 531(E)/Ess. Com./Sugar.—In exercise of the powers conferred by clause 5 of the Sugar (Control) Order, 1966, and in supersession of the Order of the Government of India in the Ministry of Agriculture and Irrigation (Department of Food) No. G.S.R. 449(E)/Ess. Com./Sugar, dated the 19th July, 1979, the Central Government hereby directs that,—

(I) no recognised dealers in the places mentioned below shall keep in stock at any time vacuum pan sugar in excess of the quantities mentioned against each,—

- (1) in Calcutta and extended area—
 - (a) recognised dealers who import sugar from outside West Bengal—7,500 quintals ;
 - (b) other recognised dealers—1,000 quintals ;

- (2) in other places—

- (a) in cities and towns with a population of five lakhs or more—1,000 quintals ;
- (b) in cities and towns with a population of one lakh and more, but less than five lakhs—500 quintals ;
- (c) in other towns with a population of less than one lakh—250 quintals ;

Provided that nothing in this Order shall apply to the holding of stocks of sugar—

- (i) on Government account ; or
- (ii) by the recognised dealers nominated by a State Government or an officer authorised by it to hold such stock for distribution through fair price shops ; or
- (iii) by the Food Corporation of India.

Explanation.—For the purpose of this Order, "Calcutta and extended area" means the areas specified in the Schedule to the notification of the Government of West Bengal No. 7752 P.S./F.S./14 R.92/61, dated the 16th December, 1964 ;

(II) no recognised dealer shall keep in stock at any time khandsari (open pan sugar) in excess of one thousand quintals.

[No. 1-23/79-SPY(Desk-II)]

C. N. RAGHAVAN, Jt. Secy.